अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

स्वतंत्रता आंदोलन में आजमगढ़ मण्डल का योगदान

राजेश सिंह (शोध छात्र)
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त वि0 वि0, प्रयागराज
प्रो. संतोषा कुमार
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त वि0 वि0, प्रयागराज

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष लगभग 200 वर्षों तक भारत पर शासन करके उसका शोषण करने वाले अंग्रेजों के विरुद्ध किया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में भारतीय भूमि के प्रत्येक भू–भाग से अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठी इसमें क्या जमीदार? क्या किसान? क्या अमीर? क्या गरीब? क्या पुरुष? क्या महिलाएं? क्या जवान? क्या बूढे? क्या बच्चे? सभी ने भाग लिया। सर्वप्रथम धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से राजा राममोहन राय, केशव चन्द्र सेन, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द जैसे महापुरुषों ने भारतीय जनमानस में जागृति पैदा कर भारतीयों को हीन भावना से बाहर निकाला और अंग्रेजों के समक्ष भारतवासियों को सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ किया। अंग्रेजों की शोषणपरक नीतियों के विरुद्ध छोटे–छोटे स्तरों पर किसानों, आदिवासियों एवं राजघरानो ने संघर्ष किया लेकिन भारतीय स्तर पर अंग्रेज गवर्नर जनरल डलहौजी की नीतियों (राज्य हड़प नीति ने विशेष तौर पर) ने राज्यों के अन्दर भय का माहौल पैदा कर दिया। 1856 ई. में रायल एनफील्ड राइफल की कारतूस में गाय एवं सूअर की चर्बी लगी होने की बात ने आग में घी का काम किया, परिणाम स्वरुप 1857 का विद्रोह हुआ जिसने कम्पनी शासन समाप्त कर भारतीयों को सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन कर दिया इस परिवर्तन के बाद भी अंग्रेजी शोषण कम नहीं हुआ। जिसके कारण समय–समय पर बंगभंग एवं स्वदेशी आंदोलन, होमरुल लीग आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो आंदोलन भारत की आजादी के समय तक चलते रहे। भारतीयों ने अंग्रेजों के विरुद्ध अनुनय–विनय, सत्याग्रह, असहयोग, स्वदेशी एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के साथ हिंसक गतिविधियों का सहारा लिया। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में यूनाइटेड प्रोविन्स आफ आगरा एंड अवध के क्षेत्र के रुप में आजमगढ़ मण्डल ने भारत के अन्य क्षेत्रों की भाँति अपना योगदान दिया एवं देशवासियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भाग लिया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

आजमगढ़ मण्डल का गठन 15 नवम्बर 1994 को हुआ इसके अंतर्गत आजमगढ़, मऊ एवं बलिया जिले शामिल है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में आने वाला यह क्षेत्र पहले बनारस डिविजन के अधीन आता था बाद में यह क्षेत्र यूनाइटेड प्रोविन्स आफ आगरा एण्ड अवध में आता था। स्वतंत्रता संघर्ष के समय इस क्षेत्र की उत्तरी सीमा पर गोरखपुर, दक्षिणी सीमा पर गाजीपुर था। पूर्व में बलिया के बाद बिहार की सीमा शुरू हो जाती थी जिससे इस क्षेत्र का सीधा सम्पर्क था, इसके पश्चिम में जौनपुर और बनारस स्थित था। इन क्षेत्रों का प्रभाव भी आजमगढ़ मण्डल की भूमि पर पड़ा था। आजमगढ़ मण्डल की भूमि पर अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 से लेकर 1947 ई. तक निरंतर संघर्ष किसी न किसी रूप में चलता रहा। आजमगढ़ मण्डल में सामाजिक सुधारों एवं आर्थिक आंदोलनो के कई रूप दिखाई देते है जिनका स्वतंत्रता संघर्ष को मजबूत करने में अतुलनीय योगदान था।

1857 के विद्रोह में आजमगढ़ मण्डल के आजमगढ़, मऊ एवं बलिया जिलों में विद्रोह की लहर 3 जून 1857 को पहुँची इस दिन सैनिको और जनता द्वारा विद्रोह किया गया इसके साथ अंग्रेजों के साथ संघर्ष प्रारम्भ हुआ विभिन्न सरकारी कार्यालयों पर धावे कर उनको लूटा गया एवं उन पर अधिकार स्थापित किया गया। 25 अगस्त 1857 को आजमगढ़ वार्ड द्वारा अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बहादुर शाहजफर के नाम पर घोषणा की गई। इसी समय अनेक सिपाहियों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। भोंदू सिंह, सूबेदार 17वीं एन. आई. के नेतृत्व में सेना ने फैजाबाद की ओर प्रस्थान किया। माधो सिंह, सिपाही, 17वीं एन. आई. ने विद्रोह कर लेफ्टीनेण्ट हचिंसन को गोली मार दिया, सरकार ने इनके ऊपर दो हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। बिहार के जगदीशपुर के जमींदार बाबू कुँवर सिंह ने अतरौलिया क्षेत्र में आकर अंग्रेजी सेना को परास्त किया एवं इनके भाई अमर सिंह ने आजमगढ़ के विद्रोहियों को अपना नेतृत्व प्रदान किया। आजमगढ़ मण्डल के परगन सिंह, शेख रजब अली, पृथ्वीपाल सिंह, राजा बेनी माधो, जगबन्धन सिंह इत्यादि विद्रोहियों ने आपस मे सम्पर्क करते हुए अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया। सूबेदार भोंदू सिंह के नेतृत्व में सरकारी खजाने को रानी की सराय के पास लूटा, इस घटना से प्रभावित होकर आजमगढ़ के जेल गार्ड ने कैदियों को आजाद कर दिया। इस घटना की तुलना फ्रांसीसी क्रांति की महत्वपूर्ण घटना बास्तील के पतन से की जाती है। 23 जुलाई 1857 ई. को रजब अली की अगुवाई में लगभग 400 लोगों ने आजमगढ़ कोतवाली पर कब्जा कर लिया। आजमगढ़ के पलवार राजपूतों ने विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया इसके लिए उन्होंने गोरखा सेना से भी मोर्चा लिया था। 4 जून, 1857 ई. को वर्तमान मऊ के चिरैयाकोट नामक स्थान पर जनसमूह ने लूटपाट किया, 5 जून को यहाँ के जमीदारों ने जहाँगंज बाजार में लूटपाट किया। बेल्हा बाँस

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

के जमींदार ने जनसमूह के सहयोग से थाने और तहसील को लूटने का असफल प्रयास किया। दोहरी घाट के निलहे अंग्रेज बेनीबुल्स ने अपनी एक सेना खड़ी की एवं 20 जून 1857 को आजमगढ़ शहर पर अधिकार किया। मिस्टर बेनीवुल्स ने 30 जून 1857 को मोहब्बतपुर गाँव पर आक्रमण कर विद्रोहियों को बंदी बनाया और कोतवाली में बंद कर दिया। बेनीवुल्स ने कोइल्सा और अतरौलिया विद्रोह को दबाने के लिए 12 जुलाई 1857 को आक्रमण किया लेकिन माधोप्रसाद (पलवार ताल्लुकेदार), मुजफ्फरजहाँ, पृथ्वीपाल सिंह कि संयुक्त सेना के कारण बेनीबुल्स को हारकर पीछे हटना पड़ा। इसी अवसर पर रजब अली के हमले से अंग्रेजों को 18 जुलाई 1857 को आजमगढ़ पुनः त्यागना पड़ा। पृथ्वीपाल सिंह ने 9 अगस्त को आजमगढ़ पर अधिकार कर लिया इनका आजमगढ़ पर 25 अगस्त तक अधिकार बना रहा।

25 अगस्त के बाद गोरखा सेना कर्नल राटन और गोरखपुर के अन्य अधिकारियों के नेतृत्व में आजमगढ़ की तरफ प्रस्थान किया इस परिस्थिति में पलवारों ने शहर को छोड़ दिया। उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्र में बेनीबुल्स ने राजा बेनीमाधों एवं पलवारों को मन्दुरी में पराजित किया इसमें अनेक विद्रोही मारे गये। गोरखा सेना ने आजमगढ़ विद्रोह को क्षति पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी इस सेना ने शम्साबाद और बरामदपुर की गढ़ियों को नष्ट किया था। कर्नल लांगडेन ने विद्रोह के गढ़ अतरौलिया को ध्वस्त कर दिया। इसी में अंग्रेजो ने फूट डालो नीति का भी अनुसरण किया पलवारों के साथ मजिस्ट्रेट मिस्टर पोलक ने बात–चीत करके उनको शांत कराया लेकिन इसी मध्य बाबू कुँवर सिंह ने 17 मार्च 1858 को अतरौलिया पर अधिकार कर लिया यह अवसर उनको अंग्रेज एवं गोरखा सेना द्वारा लखनऊ पर अधिकार करने के प्रयास के कारण प्राप्त हुआ था। बाबू कुँवर सिंह ने 26 मार्च, 1858 को आसानी से आजमगढ़ पर अधिकार कर लिया। कर्नल मिलमैन ने गाजीपुर एवं बनारस की सेना से साथ कुँवर सिंह के साथ संघर्ष किया लेकिन पराजित हुआ। लार्ड मार्क केर इलाहाबाद से बनारस होते हुए आजमगढ़ की तरफ प्रस्थान किया लेकिन कुँवर सिंह ने इसको पर्याप्त क्षति पहुँचाई, इसी मध्य एडवर्ड लुगार्ड सेना के साथ लार्ड मार्क केर के साथ मिल गया अतः बाबू कुँवर सिंह ने आजमगढ़ छोड़ दिया लेकिन ब्रिगेडियर डगलस ने कुँवर सिंह का पीछा किया, लेकिन बगहीडाड़ में कुँवर सिंह की सेना ने डगलस की सेना को परास्त कर वापस खदेड़ दिया। कुँवर सिंह के जाने के बाद परगन सिंह के विद्रोह को नेतृत्व देने का कार्य किया लेकिन जल्द ही विद्रोही शान्त हो गये, कर्नल केली ने जनपद को विद्रोहियों के हाथों से मुक्त करा लिया।

असहयोग आन्दोलन के समय भी आजमगढ़, मऊ, एवं बलिया के क्षेत्रों में स्वतंत्रता संघर्ष को समर्थन देने वाली अनेक घटनाएं हुई। 26–27 नवम्बर 1921 ई. को आजमगढ़ के कर्बला मैदान में राजनीतिक सभा

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरु ने किया। विदेशी कपड़ो की होली जलाई गई, इसमें फूलपुर, सरायमीर, मुबारकपुर एवं मऊ इत्यादि स्थानों के दुकानदारों ने व्यापक रूप से सहयोग प्रदान किया। हजारों लोगों की गिरफ्तारियाँ सितम्बर 1921 में हुई। मऊ जिले के अल्गु राय शास्त्री, महेन्द्र मिश्रा, रामजतन सिंह एवं मुसाफिर सिंह की असहयोग आंदोलन के कारण गिरफ्तारी हुई। असहयोग आंदोलन के समय स्वयं सेवको की ताकत का प्रयोग किया गया इनके द्वारा आन्दोलन के समर्थन में जुलूस निकालना, सभाएं करना, वस्त्रों को आग लगाना, सरकारी कार्यालयों एवं अदालतों का बहिष्कार किया गया, इस दौरान 4 अप्रैल 1922 को जवाहर लाल नेहरू द्वारा बलिया में लगभग 3000 के जनसमूह को सम्बोधित किया गया, इससे आंदोलन में तेजी आई, जिससे आंदोलन और मजबूत हुआ ।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय भी आजमगढ़ मण्डल के लोगों ने आंदोलन में अपना योगदान दिया इस समय मण्डल के तीनों जिलों में नमक कानून का उल्लंघन किया गया, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार हुआ, खादी निर्माण एवं उसके प्रचार–प्रसार से सम्बन्धित कार्य किए गये। आजमगढ़ मण्डल के बलिया जिले में जवाहर लाल नेहरू पुनः आए (इसके पूर्व वह असहयोग आंदोलन के समय भी बलिया आ चुके थे) एवं जनसभा में भाग लिया। अप्रैल 1930 में आजमगढ़ जिले में नमक कानून तोड़ा गया, स्थानीय स्तर पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने नमक बनाकर ब्रिटिश कानून की अवहेलना किया। मऊ क्षेत्र में विदेशी कपड़ा व शराब की दुकानों का पिकेटिंग और बहिष्कार हुआ। इस समय असहयोग आंदोलन के समय सक्रिय रहे अल्गुराय शास्त्री ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी सक्रिय भूमिका निभाई। आजमगढ़ में अप्रैल 1930 में नमक कानून का उल्लंघन किया गया, जिसमें नमक बनाना एवं खरीदना शामिल है। आजमगढ़ में विदेशी कपड़ा की दुकानों, शराब की दुकानों पर प्रदर्शन के साथ वन/वनाधिकार के खिलाफ प्रतिरोध हुआ। आजमगढ़ में कांग्रेसी नेताओं (स्थानीय) ने ग्रामीण स्तर पर अभियान चलाकर लोगो को आंदोलन के लिए संगठित करने का प्रयास किया। आजमगढ़ जिले के सूर्यनाथ सिंह ने स्थानीय स्तर पर सभाओं का आयोजन करके आंदोलन के पक्ष में जागरण करने का प्रयास किया ।

भारत छोड़ो आंदोलन के समय आजमगढ़ मण्डल के लोगों ने स्वतंन्त्रता के समर्थन में अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया, आंदोलन प्रारम्भ होने पर कार्यकर्ताओं, छात्रो एवं अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने जिला कांग्रेस कार्यालय पर अधिकार कर लिया इसमें प्रमुख रुप से सीताराम अस्थाना एवं सच्चितानंद पाण्डेय के नाम मिलते है। अंग्रेजी परिवहन को बाधित करने के लिए सरायमीर रेलवे स्टेशन के पास रेल की पटरी उखाड़ी गयी, 14 अगस्त 1942 ई0 को एक रैली तरवाँ थाने पहुँचकर कब्जा कर लिया, थानेदार ने अपनी

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

पिस्तौल बागियों को सौप दिया। आजमगढ़ में इस आंदोलन के दौरान करीब 400 लोगों को गिरफ्तार किया गया एवं अनेकों को जेल की सजा दी गई, यहाँ की जनता पर भारी जुर्माना लगाया गया। भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान मऊ जिले के मधुवन क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण घटना घटी, यहाँ पर 13 अगस्त 1942 ई0 को स्वतंत्रता सेनानियों ने थाने पर तिरंगा फहराने का प्रयास किया, इसकी आज्ञा नही मिलने पर प्रदर्शनकारियों ने थाने पर पथराव कर दिया, इसके उत्तर में पुलिस ने गोली चला दिया, जिसमें 13 प्रदर्शनकारियों की मृत्यु के साथ अनेक घायल भी हुए। शहीदों में बनवारी लाल, हनीफ दर्जी, कुमार मांझी, लक्षनपति कुंवर, रामलखन पाण्डेय एवं मुन्नी कुंवर इत्यादी के नाम प्राप्त होते है। भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान बलिया में अनेक घटनाएं हुई, भारत छोड़ो आंदोलन के समर्थन में स्कूल बंद कर दिये गये, स्थान–स्थान पर हड़ताले हुई, सार्वजनिक सभाएं कर आंदोलन को मजबूत करने का कार्य किया गया। स्थानीय जनसमूह के नेतृत्व में जेल को कब्जा कर बंदियों को रिहा कर दिया गया। चित्तू पान्डेय के नेतृत्व में बलिया में अस्थाई सरकार की स्थापना की गई, जनता ने स्वयं सरकारी कार्यों का नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया, लेकिन यह सरकार केवल तीन दिन तक ही रही, 22–23 अगस्त की मध्यरात्रि के समय ब्रिटिश सेना एवं प्रशासन ने पुनः बलिया पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। सरकार द्वारा कई नेताओं को गिरफ्तार कर उनके घरों को जला दिया गया। बलिया की तरह भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अन्य दो स्थानों पर समानान्तर सरकारों की स्थापना हुई, एक थी मिदनापुर, बंगाल की 'तमलुक राष्ट्रीय सरकार' एवं दूसरी सतारा, महाराष्ट्र की 'प्रतिसरकार'। प्रति सरकार , स्थापित समानान्तर सरकारों में सबसे अधिक समय तक चलने वाली सरकार रही।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के समय आजमगढ़ मण्डल के जिलों में अनेक संगठनों, संस्थाओं की स्थापना हुई जिनके माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को मजबूती प्राप्त हुई। जिला कांग्रेस कमेटी, आजमगढ़ की स्थापना 1908 के बाद हुई जिसने औपचारिक रुप से असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। जिला कांग्रेस कमेटी, बलिया की स्थापना 1917 के बाद हुई, यह भी 1920 असहयोग आंदोलन से सक्रिय रही। स्वतंत्रता संघर्ष के समय छात्र संगठनों की स्थापना हुई, स्टूडेंट्स कांग्रेस, बलिया ने सत्याग्रह एवं बहिष्कार में सक्रिय भूमिका निभाई, वहीं विधार्थी सभा, आजमगढ़ की स्थापना 1921 में हुई जिसने छात्रों को राष्ट्रीय विद्यालयों में पढ़ने के लिए प्रेरित करने के साथ राष्ट्रीय आंदोलनों में अपना योगदान दिया। असहयोग आंदोलन के समय राष्ट्रीय विद्यालय, आजमगढ़ एवं राष्ट्रीय विद्यालय, बलिया की स्थापना कर सरकारी शिक्षा का बहिष्कार किया गया। 1934 में स्थापित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने आजमगढ़ एवं बलिया में सक्रिय रहकर कार्य किया। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने भी भाग लिया। महिला समिति, बलिया भारत

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

छोड़ो आदोलन के समय बनी, इसने भारत छोड़ों आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया तथा महिला मंडल आजमगढ़ की स्थापना 1930 के दशक में हुई इसकी विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार एवं शराब विरोधी आंदोलनों में सक्रीय भूमिका रही। किसानों ने किसान सभा, बलिया एवं किसान सभा, आजमगढ़ की स्थापना कर अंग्रेजी सरकार का विरोध किया। आजमगढ़ में चंद्रिका प्रसाद ने स्थानीय किसानो एवं कार्यकताओं को नेतृत्व प्रदान किया।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष, भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व गाथा है जो भारतीयों द्वारा भारत की स्वतंत्रता के लिए दिये गये योगदानों को सजोए एवं सुरक्षित रखे हुए है। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का इतिहास भारत के प्रत्येक क्षेत्र के प्रत्येक क्रिया–कलाप को अपने अंदर समाहित किए हुए है। यह सत्य है कि प्रमुखता से कुछ विशेष क्षेत्रों का नाम ही आता है, जिसको हम दिल्ली, बम्बई, कोलकाता, मद्रास, पंजाब, अवध के नाम से जानते है, ये स्थान स्वतंत्रता संघर्ष के प्रमुख केन्द्र थे, लेकिन इनके पीछे पूरा भारतीय जनसमूह खड़ा था, जिसने समय–समय पर किसी न किसी रुप में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान दिया। वर्तमान आजमगढ़ मण्डल में शामिल, आजमगढ़, मऊ एवं बलिया जिले जो तत्कालीन समय में यूनाइटेड प्रोविन्स आफ आगरा एण्ड अवध के भाग थे, ने स्वतंत्रता संघर्ष में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया था। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जानेवाला 1857 के विद्रोह के समय आजमगढ़ मण्डल विद्रोहियों का गढ़ रहा, यहाँ पर अनेक जमीदारों ने क्रांति में सहयोग प्रदान किया। आजमगढ़ मण्डल के क्षेत्र कई बार अंग्रेजों के अधिकार से मुक्त रहे, लेकिन अंततः अंग्रेजो ने पुनः यहाँ पर अधिकार कर लिया। बीसवीं शताब्दी में आजमगढ़ मण्डल का क्षेत्र अधिक जागरूक हुआ, अब यहाँ पर स्वतंत्रता आंदोलन को अधिक सक्रिय समर्थन प्राप्त हुआ। अब यहाँ पर उच्चवर्ग एवं शिक्षित वर्ग के साथ किसानों एवं महिलाओं ने अपनी हिस्सेदारी दर्ज किया। असहयोग आंदोलन के समय बहिष्कार, स्वदेशी शिक्षा को जबरदस्त समर्थन मिला। यह व्यवस्था सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ों आंदोलन के समय से होते हुए भारत की आजादी तक चलती रही, इस समय नमक कानून का विरोध करना, परिवहन को बाधित करने के प्रयास में रेलपटरियों को नुकसान पहुँचाना, शराब की दुकानों के समक्ष प्रदर्शन करना, मऊ जिले के मधुबन में थाने पर तिरंगा फहराने को लेकर तेरह लोग गोली से शहीद हो गये, 1942 में चित्तू पाण्डेय के नेतृत्व में बलिया में समानांतर सरकार की स्थापना तक की गई थी, आदि योगदान प्रमुखता से दिखाई देते है। इस तरह आजमगढ़ मण्डल का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान सराहनीय रहा। यह सहयोग उस कहावत को चरितार्थ करता है जिसमें कहा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

गया है कि बूंद–बूंद से सागर भरता है, उसी प्रकार क्षेत्रीय सहयोगों ने भारत को स्वतंत्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ ग्रन्थ–

- सिंह, अयोध्या (2006) भारत का मुक्ति संग्राम, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली।
- सिंह, फूलबदन, आजमगढ़ का स्वाधीनता संग्राम, जिला स्वाधीनता संग्राम सैनिक संघ, आजमगढ़।
- रिजवी, सैयद नजमुल रजा (2018) 1857 का विद्रोही जगत (पूरबी उत्तर प्रदेश) ओरियंट ब्लैक स्वान, हैदराबाद।
- गांगुली ए.बी. (1980) गोरिल्ला फाइटर्स आफ दि फर्स्ट, फ्रीडम मूवमेन्ट, जानकी प्रकाशन, पटना।
- सेन, सुरेन्द्रनाथ (2005) अठारह सौ सत्तावन, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली
- सिंह, दुर्गा प्रसाद (1962) बाबू कुँवर सिंह, विद्या भवन, पटना।
- सिंह, कन्हैया (2004) 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- ताराचन्द (1977) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
- मिश्रा, अमरेश (2006) मंगल पाण्डेय, रूपा एन्ड कम्पनी, नई दिल्ली।